डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

पाठ्य सामग्री,

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 12.09.2020

व्याख्यान संख्या-56 (कुल सं. 92)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

रुनित भृङ्ग घंटावली झरत दान मधुनीर।

मंद मंद आवत चल्यो कुञ्जर कुञ्जसमीर।।

प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्वर्ण-मंजूषा' से उद्धृत है। इसके रचयिता रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवि बिहारी हैं, जिनकी रचना 'बिहारी सतसई' हिन्दी साहित्य में लोकप्रियता के क्षेत्र में रामचरितमानस के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तक मानी जाती है।

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

प्रस्तुत प्रसंग वसंत ऋतु के सुखद पवन के वर्णन का है। मंद-मंद चलने वाले पवन की तुलना कवि ने यहाँ हाथी से किया है और रूपक रूप में उसका वर्णन किया है।

कवि का कहना है कि गुंजार करते हुए भौंरों की घंटावली वाला एवं मकरंद रूपी झड़ते हुए मद से युक्त, कुंजों से चलने वाली हवा ऐसे चल रही है जैसे कोई कुंजर अर्थात् हाथी मंद-मंद चला आ रहा हो।

प्रस्तुत प्रसंग में यह ध्यातव्य है कि हाथी के गले में प्रायः लोग घंटा अथवा घंटियाँ बाँध देते हैं जिससे चलते समय उनके स्वर गूँजते रहते हैं; और प्राकृतिक रूप से हाथी के गण्डस्थल से मद झड़ते रहते हैं जिसके कारण उसमें प्रायः मस्ती का भाव रहता है। इसी से 'मदमस्त' शब्द बना है। वसंत ऋतु में फूलों की झाड़ियों से होकर गुजरने वाली मंद-मंद हवा फूलों पर उड़ते रहने वाले भौंरों के गुंजार के कारण मधुर ध्वनि से युक्त रहती है। साथ ही वसंत ऋतु में फूलों से मकरंद अर्थात पुष्परज झरते रहते हैं। इस पुष्परज को ही प्रायः लोग पुष्परस भी कहते हैं। इसी का सादृश्य कवि ने मद से उपस्थापित किया है। इन विशेषताओं से युक्त वसंत की हवा जब चलती है तो लगता है जैसे कोई मदमस्त हाथी चल रहा हो।

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

प्रस्तुत दोहे में 'दान' का तात्पर्य स्वाभाविक रूप से किसी को देने के अर्थ में नहीं है, बल्कि इसका तात्पर्य 'हाथी का मद' है। 'मधुनीर' का अर्थ मकरंद है। कुंजर का अर्थ हाथी होता है। कुंज से चलने वाली हवा के लिए कुंजर शब्द का प्रयोग शाब्दिक रूप में भी लालित्यपूर्ण हो गया है।

प्रस्तुत दोहे में 'रुनित भृङ्ग घंटावली' एवं 'झरत दान मधुनीर' इन दोनों समस्त पदों में बहुव्रीहि समास है और ये दोनों 'कुंज समीर' के विशेषण हैं।

प्रस्तुत दोहे में रूपक अलंकार है।